सुकुमार राय

की सुप्रसिद्ध बाल-कहानी 'ह ज ब र ल' हिन्दी में

आ ल ु ल

(आमड़ी लामड़ी लफा लुफुस)

1921 2021

हिन्दी अनुवाद

जयदीप शेखर

आ ला ल लु

(आमड़ी लामड़ी लफा लुफुस)

सुकुमार राय की सुप्रसिद्ध बाल-कहानी “ह ज ब र ल” हिन्दी में

अनुवादक:
जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

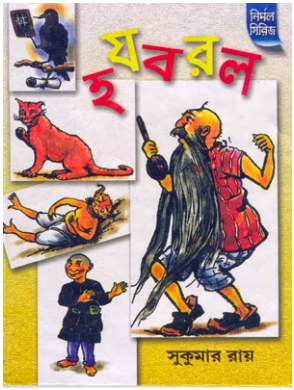

Cover of Bengali book ‘Ha-Ja-Ba-Ra-La’

-: Hindi eBook :-

Aa La La Lu: Aamdi Lamdi Lafa Lufus

Hindi translation of the famous Bengali nonsense story 'Ha Ja Ba Ra La'

Original author: Sukumar Ray (1887-1923)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen name- Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2021 Translator

Published by:

JagPrabha

jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com

Price: Rs. 50.00

***

भूमिका

आज से एक सौ साल पहले बँगला भाषा के प्रसिद्ध बाल-कथाकार सुकुमार राय ने "ह ज ब र ल" शीर्षक से यह बाल-कहानी लिखी थी। अँग्रेजी में ऐसी कहानियों को 'नॉनसेन्स स्टोरीज' कहते हैं; क्या हिन्दी में इन्हें 'ऊट-पटाँग कहानी' कहा जाय? कहानी के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर इस कहानी को हिन्दी में "आ ला ल लु" नाम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

मूल बँगला कहानी में कुछ बाल-कविताएं भी हैं, जिनका 'अनुवाद' सम्भव नहीं है, इसलिए शुरुआती पाँच कविताओं/पंक्तियों के स्थान पर कवि **रामप्रिय मिश्र 'लालधुआँ'** की बाल-कविताओं/पंक्तियों को शामिल किया जा रहा है और बाकी कविताओं से सिर्फ 'भाव' ग्रहण करते हुए नयी बाल-कविताएं ही लिखने की कोशिश की जा रही है।

सम्भवतः "ह ज ब र ल" शीर्षक का कोई विस्तृत रूप नहीं है, यानि यह शीर्षक निरर्थक है, लेकिन हिन्दी नाम "आ ला ल लु" का विस्तृत रूप होगा- "आमड़ी लामड़ी लफा लुफुस।"

कहानियों में शामिल चित्र मूल बँगला पुस्तक से लिए गये हैं, अर्थात् ये सुकुमार राय के ही बनाये हुए हैं।

-अनुवादक
दिसम्बर 2021

सुकुमार राय बँगला साहित्य के सुप्रसिद्ध बाल-कथाकार रहे हैं। बच्चों के लिए उन्होंने ढेरों कविताएं और कहानियाँ लिखी हैं। उनकी तीन रचनाएं बहुत प्रसिद्ध हैं- 1. आबोल-ताबोल, 2. ह-ज-ब-र-ल और 3. पागला दासू। 'आबोल-ताबोल' कविता-संग्रह है, 'ह-ज-ब-र-ल' छोटी कहानी है और 'पागला दासू' एक लम्बी कहानी है। सुकुमार राय का जन्म 30 अक्तूबर 1887 को हुआ था और उनका देहान्त मात्र 35 वर्ष की आयु में 10 सितम्बर 1923 को हुआ था। महान फिल्मकार सत्यजीत राय इन्हीं के सुपुत्र हैं।

***

रूमाल बन गया बिल्ला 7
काकेश्वर कलूटा 10
ऊधो..... 11
बुधो 16
हिजी बिज बिज 18
श्री ब्याकरण सींग..... 19
टकला कवि 21
मानहानि का मुकदमा..... 25
क्या यह सपना था? 32

आ ला ल लु

(ह ज ब र ल- हिन्दी में)

रूमाल बन गया बिल्ला

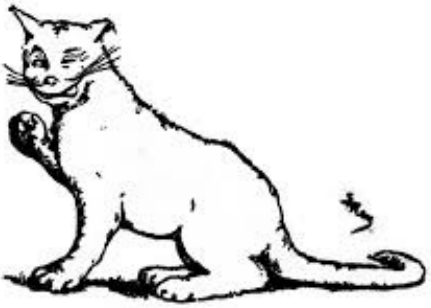

बहुत गर्मी थी। पेड़ की ठण्डी छाया में चुपचाप लेटा हुआ था, फिर भी पसीने से लथपथ हो रहा था। घास पर रूमाल पड़ा हुआ था, पसीना पोंछने के लिए जैसे ही उसे उठाने गया, रूमाल बोला, "म्याऊँ।" अजीब बात थी! रूमाल म्याऊँ क्यों बोलने लगा?

ध्यान से देखा- रूमाल अब रूमाल तो था नहीं, लाल रंग का एक गोल-मटोल बिल्ला मूँछें फड़काते हुए गोल-गोल आँखों से मुझे घूर रहा था।

मैंने कहा, "क्या आफत है! था एक रूमाल, बन गया बिड़ाल।"

बिल्ला तपाक-से बोल उठा, "आफत कैसी? होता है अण्डा, बन जाता है कुकड़ू-कूँ मुर्गा। ऐसा तो होता ही है।"

थोड़ा सोचकर मैंने कहा, "ठीक है, तो अब मैं तुम्हें क्या कहकर बुलाऊँ? तुम तो सचमुच के बिल्ले नहीं हो, असल में तुम रूमाल हो।"

बिल्ला बोला, "बिल्ला भी कह सकते हो, रूमाल भी कह सकते हो, चन्द्रविन्दु भी कह सकते हो।"

मैंने कहा, “चन्द्रविन्दु भला क्यों?”

सुनकर बिल्ला बोला, “इतना भी नहीं पता?” कहकर एक आँख बन्द करके वह मेरा मजाक उड़ाते हुए हँसने लगा। मुझे बहुत बुरा लगा। सोचा, चन्द्रविन्दु के बारे में मुझे पता होना चाहिए था। इसलिए हड़बड़ाकर बोल पड़ा, “ओ हाँ-हाँ, समझ गया।”

बिल्ला खुश होकर बोला, “हाँ, यह हुई न बात। चन्द्रविन्दु का च, बिल्ला का तालव्य श, रूमाल का मा- मिलकर हुआ चश्मा। क्यों हुआ न?”

मेरी कुछ समझ में नहीं आया, लेकिन यह सोचकर कि कहीं बिल्ला मुझपर उसी तरह से फिर हँसने न लगे, मैंने साथ-ही-साथ हाँ-हूँ कर दिया। इसके बाद बिल्ला कुछ पल आकाश की ओर देखता रहा फिर अचानक बोला, “गर्मी लग रही है, तो तिब्बत जा सकते हो।”

मैंने कहा, “कहना बहुत आसान है, लेकिन कहने से ही जाया तो नहीं जा सकता न।”

बिल्ले ने कहा, “क्यों? इसमें मुश्किल क्या है?”

मैंने कहा, “तुम्हें पता है, कैसे जाया जाता है?”

चवन्नी हँसी हँसकर बिल्ला बोला, “क्यों नहीं जानूँगा? कोलकाता, डायमण्ड हार्बर, रानाघाट, तिब्बत, बस। सीधा रास्ता है, सवा घण्टे का रास्ता है, चले जाओ।”

मैंने कहा, “तो ठीक है, मुझे रास्ता बता सकते हो?”

सुनकर बिल्ला थोड़ा गम्भीर हो गया। फिर सिर हिलाकर बोला, “ऊँहूँ, यह मेरा काम नहीं है। मेरे पेड़ू भैया यदि होते, तो ठीक-ठीक बता सकते थे।”

मैंने पूछा, “ये पेड़ू भैया कौन हैं? कहाँ रहते हैं?”

बिल्ला बोला, “पेड़ू भैया और कहाँ रहेंगे? पेड़ पर रहते हैं।”

मैंने कहा, “उनसे भेंट कहाँ होगी?”

बिल्ला बहुत जोर से सिर हिलाकर बोला, “भेंट नहीं होगी, होने का उपाय ही नहीं है।”

मैंने कहा, “सो क्यों?”

बिल्ला बोला, “सो क्यों, जानते हो? मान लो, तुम उलूबेड़ा गये उनसे भेंट करने, तब वे मोतीहारी में रहेंगे। जब मोतिहारी जाओगे, तब पता चलेगा कि वे

रामकिशनपुर में हैं। और वहाँ जाने पर पाओगे कि वे कासिमबाजार में हैं। भेंट होने का सवाल ही नहीं है।"

मैंने पूछा, "फिर तुम लोग कैसे भेंट करते हो?"

बिल्ला बोला, "बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। पहले हिसाब लगाकर देखना पड़ता है कि भैया कहाँ-कहाँ नहीं हैं; फिर हिसाब लगाना पड़ता है कि भैया कहाँ-कहाँ होंगे; फिर देखना होगा कि भैया अभी कहाँ हैं। फिर देखना होगा कि इस हिसाब से जब वहाँ हम पहुँचेंगे, तब वे कहाँ रहेंगे। इसके बाद देखना होगा कि- "

मैंने जल्दी से उसे रोककर कहा, "किस तरह का हिसाब?"

बिल्ला बोला, "वह बहुत कठिन है। जानना चाहते हो?" कहकर एक सूखी टहनी से घास पर एक लम्बी लकीर खींचकर वह बोला, "मान लो कि यह पेड़ू भैया हैं।" इतना कहकर कुछ पल वह चुप बैठा रहा।

फिर वैसी ही एक और लकीर खींचकर बोला, "मान लो कि यह तुम हो।" कहकर वह फिर गर्दन टेढ़ी करके चुप हो गया।

फिर अचानक एक और लकीर खींचकर बोला, "यह मान लो चन्द्रविन्दु है।" इसी तरह वह थोड़ी-थोड़ी देर जाने क्या सोचता और फिर जमीन पर एक लम्बी लकीर खींचकर कहता रहा- "मान लो यह तिब्बत है- ", "यह मान लो पेड़ू-भाभी खाना पका रही है- ", "मान लो कि पेड़ पर यह एक कोटर है- "

ये सब सुनते-सुनते मुझे थोड़ा गुस्सा आ गया। बोला, "धत्त तेरे की! क्या सब ऊट-पटाँग बोले जा रहे हो, नहीं अच्छा लग रहा।"

बिल्ला बोला, "अच्छा, फिर मैं आसान ढंग से बताता हूँ। आँखें बन्द करो, मैं जैसा कहूँगा, वैसा हिसाब करना।" मैंने आँखें बन्द कीं।

आँखें बन्द किये रहा, किये रहा और उधर बिल्ले की कोई आवाज ही नहीं। अचानक सन्देह हुआ। आँखें खोलकर देखा, तो पाया कि बिल्ला दुम ऊपर उठाये बगीचे की बाड़ फलाँगकर भाग रहा है और लगातार खी-खी करके हँसे जा रहा है।

काकेश्वर कलूटा

क्या करता, पेड़ के नीचे एक पत्थर पर बैठ गया। बैठते ही जाने कौन भारी कर्कश आवाज में बोला, “सात दूनी कितना होता है?”

मैंने सोचा, अब यह कौन आ गया? इधर-उधर देख रहा था कि फिर वही आवाज आयी, “क्या हुआ, जवाब नहीं दे रहे? सात दूनी कितना होता है?” अब मैंने ऊपर देखा- एक काला कौआ स्लेट-पेन्सिल लेकर जाने क्या लिख रहा था और गर्दन टेढ़ी कर मेरी ओर बीच-बीच में देख भी रहा था।

मैंने कहा, “सात दूनी चौदह।”

सुनकर कौआ सिर हिला-हिलाकर बोलने लगा, “नहीं हुआ, नहीं हुआ, फेल।”

मुझे बहुत गुस्सा आया। बोला, “बिलकुल हुआ है। सात एक्के सात, सात दूनी चौदह, सात तिया इक्कीस।”

कौए ने कोई जवाब नहीं दिया, मुँह में पेन्सिल दबाकर कुछ सोचने लगा। फिर बोला, “सात दूनी चौदह का चार, हासिल रही पेन्सिल।”

मैंने कहा, “अभी तो कह रहे थे सात दूनी चौदह नहीं होता? अब क्या हुआ?”

कौआ बोला, “जब तुम बता रहे थे, तब पूरे चौदह नहीं हुए थे। तब थे तेरह रुपये, चौदह आना, तीन पाई। अगर मैं समय पर झट-से 14 न लिख डालता, तो अब तक चौदह रुपये, एक आना, नौ पाई हो जाता।”